Dr. Kaushal Kumar
B. A. I
P. Eco. II

इसका कारण यह है कि भूमि प्रकृति प्रदत्त मुफ्त देन (free gift nature) है तथा इसका वास्तविक मूल्य नहीं होता। अतः वास्तविक आय की गणना में भूमि के लगान को सम्मिलित नहीं किया जाता। पुनः संगठन कर्ताओं को दिया जानेवाला वेतन मजदूरी (wages) में जोड़ दिया जाता है।

इस प्रकार कुल राष्ट्रीय आय Gross National Income के अन्तर्गत निम्नलिखित मदें सम्मिलित की जाती हैं:—

(I) मजदूरों को दी जानेवाली मजदूरी (wages) जिसमें संगठन कर्ताओं को दिया जाने वाला वेतन भी सम्मिलित है।

(II) पूँजी पर दिया जाने वाला ब्याज (Interest)।

(III) साहसी को मुनाफा (Profit)।

(IV) उत्पादन के साधनों को दी गयी अन्य कोई अदायगी (any other payment)।

(V) उपरोक्त मदों के अतिरिक्त कुल राष्ट्रीय आय में एक और मद सम्मिलित की जाती है यदि किसी एक वर्ष में देश में कुछ वस्तुओं और सेवाओं का आयात होता है।

इस प्रकार कुल राष्ट्रीय आय (Gross National Income) वह है जिसमें देश के अन्तर्गत किसी दिये गये वर्ष में उत्पादन के साधनों को दी गयी अदायगी (payment) तथा निर्यात एवं आयात के अन्तर से प्राप्त शुद्ध आय को सम्मिलित किया जाता है।

अतः कुल राष्ट्रीय आय (Gross National Income) = मजदूरी + ब्याज + मुनाफा + उत्पादन के साधनों को दी गयी अन्य कोई अदायगी + निर्यात से प्राप्त आय — आयात पर खर्च की गई आय

शुद्ध राष्ट्रीय आय (Net National Income)

कुल राष्ट्रीय आय तथा शुद्ध राष्ट्रीय आय में अन्तर है शुद्ध राष्ट्रीय आय वह आय नहीं है जो व्यक्ति की खाता बही में दिखायी जाती है वरन यह वह आय है जो व्यक्ति वास्तव में प्राप्त करते हैं। दूसरे शब्दों में शुद्ध राष्ट्रीय आय वह आय है, जो लोग वास्तव में कुल राष्ट्रीय आय में से कुछ मदों को घटाकर शुद्ध रूप में प्राप्त करते हैं। ~~शुद्ध~~

शुद्ध राष्ट्रीय आय = कुल राष्ट्रीय आय (Gross National Income) - अप्रत्यक्ष कर (Indirect taxes) + सरकारी उपक्रमों का लाभ (Earning of govt. enterprises)

Dr Kaushal Kumar

4 दान (Donations) :- आन्तरिक एवं बाह्य उपहार व विदेशी विनियोग पर प्राप्त ब्याज एवं विदेशी विनियोग पर दिये जाने वाले ब्याज का सन्तुलन शेष।

राष्ट्रीय आय की गणना (Measurement of National Income) → राष्ट्रीय आय गणना के निम्नलिखित तरीके हैं

(I) उत्पादन गणना पद्धति (Census of production Method) :- इस पद्धति के अनुसार वस्तुओं और सेवाओं के कुल वार्षिक उत्पादन में कच्चे माल की कीमत, घिसावट एवं अनावश्यक पूँजी का प्रतिस्थापन व्यय, अन्तर्निहित दुहरी गणना वाले व्यय तथा कर व बीमा का व्यय निकालकर जो शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन बचता है, उसे राष्ट्रीय आय कहते हैं।

(II) आय गणना पद्धति (Census of Income Method) :- इस पद्धति के अनुसार देश के सम्पूर्ण व्यक्तियों एवं संस्थाओं की आय की गणना की जाती है तथा उनके कुल योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं। दूसरे शब्दों में उत्पादन के सभी साधनों द्वारा प्राप्त कुल आय को राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

(III) व्यय गणना पद्धति (Census of Expenditure Method) :- व्यय गणना पद्धति के अनुसार देश के सम्पूर्ण व्यक्तियों एवं संस्थाओं के व्यय, बचत, तथा संचय (Hoarding) की गणना की जाती है तथा उनके कुल योग को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

(IV) व्यावसायिक गणना पद्धति (Census of Occupation Method) :- इस पद्धति में विभिन्न व्यवसाय में लगे हुए व्यक्तियों की आय की गणना करके कुल योग प्राप्त किया जाता है, जो राष्ट्रीय आय होती है। विभिन्न व्यवसायों में कृषि, उद्योग, यातायात, सार्वजनिक सेवा आदि सम्मिलित हैं।

(V) उत्पादन एवं आय पद्धति का मिश्रण (A combination of Production and Income Method) :- डॉ. राव (Dr. V.K.R. V. Rao) के अनुसार राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन एवं आय पद्धति को मिलाकर की जानी चाहिये।

(VI) सामाजिक लेखा पद्धति :- इस पद्धति के प्रवर्तक प्रो० रिचर्ड स्टोन हैं। इस पद्धति अनुसार देशवासियों के लेन देन का अध्ययन कर उन्हें कई वर्गों में विभाजित किया जाता है, इसके पश्चात सभी वर्गों में होने वाले लेन-देन सम्बन्धी रखे गये खातों की राशियों का योग कर राष्ट्रीय आय प्राप्त की जाती है।

Dr. Kaushal Kumar
B.A. part 3
Eco. 2

निष्कर्ष :- उपर्युक्त राष्ट्रीय आय की गणना से निम्न विभिन्न तरीकों को अपनाया जाता है, जिनके प्रत्येक पद्धति के कुछ गुण-दोष हैं, लेकिन उत्पादन गणना पद्धति इनमें सबसे सर्वश्रेष्ठ है। यही कारण है कि राष्ट्रीय आय की गणना के लिए मुख्यतः उत्पादन गणना पद्धति (Census of production method) को ही अपनाया जाता है।

राष्ट्रीय आय की गणना में कठिनाइयाँ -

(Difficulties in the Measurement of National Income)

अब हमने राष्ट्रीय की गणना के विभिन्न पद्धतियों की चर्चा की है। उनके द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना करने में प्राय: निम्नलिखित कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं जो निम्न हैं :-

i) चाहे गणना की कोई भी पद्धति क्यों न अपनायी जाय, ठीक-ठीक आँकड़े (Data) एकत्र करने की कठिनाई उत्पन्न होती है।

ii) राष्ट्रीय आय की गणना करते समय दोहरी गणना का भय बना रहता है और इससे छुटकारा पाना बहुत ही कठिन है।

(iii) राष्ट्रीय की गणना प्राय: मुद्रा के रूप में की जाती है लेकिन वस्तु-बदल की प्रणाली (Barter System) के कारण कठिनाई उत्पन्न होती।

(iv) राष्ट्रीय आय की गणना मुद्रा के रूप में करने के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य आवश्यक होता है।

v) वस्तुओं के मूल्य को तो आसानी से ज्ञात किया जा सकता है किन्तु अभौतिक सेवाओं के मूल्य को ज्ञात करना कठिन होता है।

इस प्रकार राष्ट्रीय आय की गणना में विभिन्न कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, लेकिन सरकारी प्रयत्नों के द्वारा उन्हें दूर कर कर कुछ किया जा सकता है तथा राष्ट्रीय आय की गणना की जा सकती है।